ISBN Number: 978-93-342-5078-7 (Book)
ISSN 2229-547X (online)

विदेह ४१४ म अंक १५ मार्च २०२५ (वर्ष १८ मास २०७ अंक ४१४)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Cover designed by AUM GAJENDRA THAKUR

Videha e-Journal: Issue No. 414 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

पद्य

३.१.प्रमोद झा 'गोकुल'-कोइली (पृष्ठ २७-२८)



१.१.अंक ४१३ पर टिप्पणी

डा धनाकर ठाकुर

171 क मूलांक 9 त होली उपाधि 2025 सटीक किन्तु विदेह पुरुषक अकादमिय अपूरित लक्ष्य पर हस्ताक्षर जाहि अनेक दर्जनक जाहिमे भनहि हमरा नहि राखल हो विदेशमा परिषद् सँ परिषद् हि तकक हमरहि रिकार्ड सहस्राधिक पृष्ठक एक हि अंकक बनि गेल जे तोड़ब प्राय: असम्भव होएत किछु मासमे संख्यानुसार संशोधित परिणाम दू सहस्रँ अघिक केवल मिथिला जागरण यात्राक भए जाएत जे मासिक अभिवृद्धि संग तीन सय टपि जाएत किन्तु यैह यायावरी नहि हमर आन मिथिला संबंधित लेखन जोड़ने ककरहूँसँ अधिक हो वा नहि अअकादमीय अपुरस्कृत श्रेणी लेखनमे ओ सर्वश्रेष्ठ नहिओ तथापि सर्वोच्च संख्यानुसार जरूर आओर आओर एहि लेल विदेहकेंटँ धन्यवाद जे हमर नाम हमरहि सहपाठीक नीचा सहजहि टीपलहि भनहि परम पूज्य शंकराचार्य पुरी प्रशंसित हमर मैथिली गद्यगीताक पांच सहस्र प्रति गाम-गाम पहुँच रहल हो जे धार्मिक चलते अपुरस्करणीय श्रेणीमे तैयो अग्रिम अनेकक श्रेणीमे सहसा कचोटित अनेक चुटकी बतबैत अछि जे कतेक मेहनतिसँ एतेक नाम विदेह संकलित करैत अधिकांशत: सटीक होली उपाधि देलक जकर विशद विवरण अजयमेरु (अजमेर) जाइत ट्रेनमे करे लागी त ओहिमे भोर भई जैत तैँ एहि एकल पंक्तीय टिप्पणीक समापन ई कहि करब जे ई नाम ओ प्रतिनाम मैथिली भाषाक वर्तमान ओ ओकर सतत लेखनीय समस्याक सद्य: निदेशक ओ समाधानसंकेतक सेहो अछि।

(1.3=2025:2212, भरतपुर-जयपुर रेलमार्ग)

प्रणव झा

होलीक अवसरपर "विदेहक उपाधि" विदेह टीम द्वारा कैल गेल मजेदार प्रयोग छैक। ऐ के माध्यम से नै खाली संप्रति मे मैथिली लिखय-पढय बला बौद्धिक लोक सब के नाम एक ठाम संकलित कैल गेल छैक अपितु दु-चारि शब्द वा एक पंक्ति के मजेदार उपाधि द हुनक वर्तमान आंशिक अथवा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के परिभाषित करबाक कोशिश रहल छैक। एहि लाथे लोक के फगुआ मे डिजिटल पटल पर एक दोसर के स्मरण करबाक, परिचय पेबाक एक दोसरक रंग मे रंगेबाक अवसर सेहो भेटल। संगहि अपन व्यक्तित्व के लोक के नजैर से ताकबाक अवसर सेहो।

गगंशे गज़्ुंन

नीक।

किन्तु एहन अवसरक उपक्रम मे

सामान्यत: मानसिक रूपें पाठकक पहिल आशापेक्षा रहैत छैक व्यंग्य विनोदक गुदगुदाइ वला नामकरण सब पढ़बाक आशीष जी। हमरा जनैत ई 'अभिधावादी' विधा नहिं छैक।

आब जेना 😆एक गोटेक नाम 'प्रेम-अघोड़ी' भ' सकैत रहनि किनको-बटुआ-विनोद !

कनको हाथक मैल पुरस्कार उपाय/उद्योग,किनको 'साहित्य मिस्त्री',एवं क्रमे...हमरा लगैए,से व्यंग्य-विनोदी सरस कल्पना-शीलता एत क्षीण छैक। ई हमर निजी मत अछि।

एकर कारण संभव छैक जे अहँक 'एक लोकिया सेना' हयब भ' सकैत अछि वा एतेक दीर्घ कवि-लेखक सूची अथवा आन किछु से तंँ नहिं ज्ञात। बहुत बधाइ आ स्वागतक अधिकारी तँ अहाँ सहजहिं थिकहुएंं। शुभकामना।

कुणाल

171 के सूची मे मात्र 17 टा महिला ? 10 % मात्र!! बहूत बेइंसाफी !

लक्ष्मण झा 'सागर'

बहुत नीक लागल होलीक उपाधि! अपनो आ अनको। हार्दिक बधाइ!

अशोक अविचल
नीक आ सामयिक व्यंग्य। वधाई

किशोर केशव

उपाधि सब नीक, मुदा हम बेसीक अर्थे नहि बुझलहुँ। जकर बुझलहुँ ताहिमे हास्य व्यंग्य नहि अभरल। तथापि एहि प्रयास लेल अभ्यर्थना। कहुना जीबैत रहओ मैथिली

शलैन्द्रे मिश्र

बहुत दिन भऽ गेलै कविता पाठक भीडियो पोस्ट केना। पुनः मैथिली साहित्यिक लेल काज शुरू करब। बंद पड़ल काज सभ फेर हेतै।

कल्पना झा

बेजोड़ आ सटीक

दिनशे यादव (नपोल)

सिर्जनाक' एकगोट अद्भुत शैली.... ! व्यङ्गमे यथार्थपरक भावक परावर्तन सेहो बेजोड ....! फगुवाके बहुत राश शुभकामना !
रमशे

क्यो कतबो 'गेल-गुजरल वा विक्षिप्त' लेखक हो,ओकरा लेल 'डंसनाइ/सांप- विशेषणक' उपयोग,नहि करबाक चाही,जेना उपाधि-सूची मे श्री 'आशीष अन्चिनहार' लेल कयल गेल अछि।
विशेषणक चयनकाल मे, बहुत सतर्कताक आवश्यकता होइ छै।

दुनू दिसुका खंडन-मंडन आ सहमति-असहमति त' साहित्यक विशेषते थिक!ओइ लेल डंसनाइबला (कु) भावनाक, कोनोटा स्थान नहि अछि।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गद्य

२.१.कल्पना झा-मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-६

२.२.प्रमोद झा 'गोकुल'-नागरिकता

२.३.परमानन्द लाल कर्ण-तीर्थक्षेत्रक माहात्म्य-४

२.४.मुन्ना जी- पोथी परिचय- तोहर कतेक रंग

२.१.कल्पना झा-मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-६



कल्पना झा

मथिली साहित्यम ेउपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एव ंहुनक परिवारक योगदान-६

आदर्शोन्मुखी कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

'सन्यासी' खण्ड-काव्य आ 'कुमार' उपन्यासक प्रकाशनक उपरान्त १९५२

ई. मे उपेन्द्रनाथ झा व्यास जीक पहिल कथा-संग्रह 'विडम्बना' प्रकाशित भेलनि। जे सात गोट उत्कृष्ट कथाक संग्रह अछि। ओना एही पोथी 'विडम्बना'क भूमिका लिखैत रमानाथ झा पोथी मे संकलित कथा सभ केँ 'गप्प' कहलनि अछि। रमानाथ जीक कहब छनि जे 'व्यास' जीक प्रतिभा विशेष रूप सँ 'गप्प' काव्य मे निखरैत अछि। हिनका सँ जे केओ परिचित छथि, जे केओ हिनका संग गप्प कएने छथि, सभ स्वीकार करताह जे गप्प करबाक हिनका मे एक गोट अद्भुत छटा छनि। अपन हृदयक भाव केँ प्रच्छन्न राखि हिनका गप्प करए नहि आबैत छलनि। हिनकर गप्प सँ हिनक स्वभाव, हिनक आचार, हिनक संस्कार, सभ कथूक जेना अभिव्यंजन होइत रहए। तेहने हिनक लिखलो 'गप्प' सभ छनि। हिनक लिखल 'गप्प' मे जँ हिनकर नाम नहिओ रहतनि तथापि हिनका सँ जे केओ नीक जकाँ परिचित छथि से बूझि जेताह जे ई हिनके रचना थिकनि। एनमेन कहबहिक अनुरूप 'गप्प' लिखबाक हिनक आत्माभिव्यंजनक संग मीलि हिनक रचना केँ रोचक ओ विलक्षण बनाए दैत अछि। ओ विषय किछु रहौक हिनक 'गप्प' मात्र सुपाठ्य होइत अछि, पाठकक चित्त केँ बिनु आकृष्ट कएने नहि रहि सकैत अछि।

खैर जे-से। कथाक संग्रह होइक वा 'गप्प'क, अछि धरि सातो के सातो सनगर। एहन सनगर जे कथाक विकास-धारा मे नब मोड़ अनलक। विविध पृष्ठभूमिक कथानक सँ युक्त एहि कथा-संग्रह केँ पढ़ि लेखकक हृदयक कोमलता सँ लोक सहजहि परिचित भ' जाएत। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण सँ कोनो घटनाक अवलोकन/चित्रण करब पसिन कएल गेल पाठक वर्ग द्वारा। युवावस्था मे 'संन्यासी' आ 'कुमार' सन कृतिक प्रकाशन लोक केँ भ्रम मे ध' देने हेतनि जे 'व्यास' जीक हृदय सांसारिक सुख सँ विरक्त सन तँ ने छनि। युवावस्था मे एहि तरहक विषय पर लिखबाक पाछाँ वैराग्य सन मानसिकताक अनुमान सेहो लगा लेल गेल होएत बहुत लोक द्वारा। अपन मैथिल समाज अनुमान लगएबा मे सभदिनाँ उस्ताद रहल अछि। से मुदा कथा-

संग्रहक प्रकाशन एहि तरहक अनुमान पर विराम लगएबा मे निश्चित सहायक रहल होएत, से हमर अनुमान अछि (छी तँ हमहूँ मैथिले ने....अनुमान लगा लेलहुँ हमहूँ)

सांसारिक सामाजिक जीवनक छोट-छोट सुख-दुखक संग अन्तर्मनक द्वंद्व कैँ उजागर करैत अछि 'व्यास' जीक कथा सभ। कथा लिखैत काल एकटा नीक कथाकार अपन हृदय उपछि क' राखि दैत अछि। आ से स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि 'व्यास' जीक लिखल कथा सभ पढ़ि क'।

हिनकर दोसर कथा-संग्रह 'भजना-भजले' प्रकाशित भेलनि १९८९ ई. मे। दुनू कथा संग्रह मिला क' मात्र सतरह गोट कथाक सृजन कएलनि उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' जी। जे हिनक विराट व्यक्तित्वक (साहित्यिक ओ सामाजिक, दुनू तरहेँ) अनुरूपेँ झुझुआन लगैत अछि। महान साहित्यकार रूप मे जानल जाइत रहल छथि। स्कुलिए जीवन मे 'व्यास' बनि गेल छलाह, उपनामक संगे वैचारिकता मे सेहो.....तखन कथाक संख्या कम होएब एहि बातक द्योतक अछि जे 'व्यास'जीक सर्जनात्मक अभिव्यक्तिक मूलविधा कथा नहि छलनि। ओना जँ 'व्यास'जीक रचनात्मक जीवनक सम्पूर्ण उपलब्धि कैँ एकठाम राखि क' देखल जाए, तँ ई स्वतः स्पष्ट भए जाइछ जे हुनक रचनात्मक जीवन मे निरन्तरता अछि। ओ निरन्तरता कथाक अतिरिक्त उपन्यास, कविता, यात्रा-साहित्यक संग अनुवाद साहित्य कैँ सेहो पुष्ट करैत भेटत। ओहुना लेखकक साहित्यिक उत्कर्षक मानदण्ड 'मात्रा' नहि, रचना मे अन्तर्निहित 'गुणवत्ता' मानल जएबाक चाही। ढाकीक ढाकी लिखलो पर जँ कोनो जीवन-मूल्य स्वीकृत नहि भए सकल अथवा रचनाकारक पाँती मे

पृथक व्यक्तित्व नहि झलकैत देखा पड़ल तँ भरिगर गत्ताक अछैतो जीवन कालहि मे ओ रचनाकार अप्रासंगिक घोषित भए जाइत अछि।

हिनक कथा सभ कल्पितो हो, तथापि कहबाक छटा तेहन चमत्कारी, भाषा तेहन प्राकृतिक, परिस्थितिक वर्णन तेहन स्वाभाविक आ चरित्रक चित्रण तेहन सहानुभूतिपूर्ण रहैत अछि जे बुझा पड़त सभटा सत्ये गप्प अछि। ताहू मे उत्तम पुरुष मे कहल गप्प वा कथा सभ मे वक्ताक स्वभाव ओ संस्कार मे लेखकक स्वभाव ओ संस्कारक ततेक साम्यता भेटैत अछि जे संदेह नहि विश्वास भ' जाइत छनि पाठक कैँ जे सभटा घटना लेखकक्क संग घटल छनि। माने अपन भोगल घटनाक साहित्यिक वर्णन कएलनि अछि लेखक। जेना हिनक सुप्रसिद्ध कथा 'रुसल जमाए' आ 'एकादशी महात्म्य' अप्पन अनुभव सन बुझा पड़त।

'व्यास' जी गप्प करबाक छटा मात्र सँ नहि एक दोसरो कारण सँ विशिष्टताक परिचय दैत रहलाह अछि अपन लेखनी मे। काव्य हो, कथा हो वा उपन्यास, सभ तरहक कृत्य मे हिनक मैथिलत्वक झलक स्पष्ट देखा पड़त। मैथिल परिवारक, मैथिल समाजक एहन वास्तविक, स्वाभाविक आ सुरुचिपूर्ण चित्रण बहुत कम रचनाकारक रचना मे देखबा लेल भेटत। अपना कैँ मैथिल कहबा मे हिनका संकोच नहि होइत छनि। ने अपन समाजक उपहास वा कुचेष्टा कए अन्य समाज मे प्रतिष्ठा लाभ हिनक अभीष्ट रहलनि। मैथिलक जे पुरान संस्कृति छैक, ताहि पर गौरव छनि हिनका। मुदा कालक्रमेण अपना समाज मे जे त्रुटि सभ आबि गेल अछि ताहि दिशि आँखि मूनि केवल प्राचीनताक पक्ष धरब सेहो हिनक उद्देश्य नहि रहलनि। प्रत्युत वर्तमान समय मे नवीन परिस्थितिक माध्यमे अपना समाज मे जे सुधार आवश्यक छैक तकरो महत्व ई नीक जकाँ बुझैत छथि। प्राचीनताक पथ धएने जीवनक कठिन

संघर्ष मे जाहि साधना सँ समाज अपन प्राचीन महत्व अक्षुण्ण राखि सकत ताही रूपक हिनक चित्रण अछि आ ताहि मे नवीनताक जे सामंजस्य अछि से हिनक भावुक हृदयक परिचय दैत अछि। दुष्टहुक चरित्र मे गुण देखाए ओकरा मानव बनाए दैत छथि। नर पिशाचक चित्रण 'व्यास' जीक रचना मे कतहु नहि भेटत।

सर्वविदित अछि जे समाज मे सभ तरहक लोक होइत अछि, चोर-उचक्का, दुराचारी-व्याभिचारी सँ लए कैँ त्यागी, परोपकारी एवं सद्वृत्तिक लोकधरि। परंच, 'व्यास'जी ओहन प्रवृत्ति अथवा प्रकृतिक लोक कैँ अपन कथाक चरित्र नहि बनओलाह। जाहि सँ सामाजिक जीवन किंवा व्यक्तिगते जीवन मे मूल्यहीनताक स्थिति आबए, ओकर विजय होइक, दुष्टता बढ़ैक।

वेदव्यासक प्रसंग कहल जाइत अछि, अठारह पुराण मे मूलतः दुइएटा तथ्य लिखल अति - परोपकार थिक पुण्य आ परपीड़न थिक पाप। जीवनक इएह आदर्श कथाकार 'व्यास' जीक कथाक नायक/नायिकाक जीवन मे परिलक्षित होइत अछि। ई आदर्शवादी आस्थावादी दृष्टि जीवन मूल्य कैँ सामाजिकता प्रदान करैत अछि। मुदा 'व्यास' जीक आस्थावाद व्यक्ति आधारित नहि अछि, व्यक्ति आत्मबल कैँ प्रकट नहि करैत अछि। जीवनक आ जीवनक प्रति व्यक्त एहि आस्थाक जड़ि अछि परोक्षसत्ता मे। धर्मनिष्ठ व्यक्तिक प्रत्येक आचारणक परिणति अथवा कर्मक फल कैँ ईश्वराधीन मानबा लेल प्रतिबद्ध रहैत अछि, से हिनक लेखनी मे यत्र-तत्र परिलक्षित होएत।

'व्यास' जीक कथा सभ मे समाज मे व्याप्त विकृति आ रूढ़ि पर प्रहार भेल अछि। आचरणक शुद्धताक संगे विचारक शुद्धता आ उच्चता पर विशेष बल

देल गेल अछि। कहबाक माने समाज मे एक टा आदर्श स्थापित करबाक प्रयास करैत सन। मूलतः आदर्शोन्मुखी साहित्यकार छलाह 'व्यास' जी।

स्तरीय कथानक ओ कथ्यक संग हिनक कथाक एकटा पैघ विशेषता रहलनि रोचकता। संगहि भाषाक विशुद्धता सेहो विलक्षण। आ तैँ मैथिली कथा साहित्यक विकास मे 'व्यास' जीक कथाक छवि सभ सँ भिन्न अछि। समकालीन अथवा परवर्तीकालक कथाकारक संरचना सँ सर्वथा भिन्न स्वाद हिनक कथा दैत अछि। 'व्यास' जीक कथा समसामयिक जीवन सँ विशेष प्रभावित नहि होइत अछि आ परिवर्तित होइत युग-जीवन आओर विकृति आ विडम्बना सँ अप्रभावित रहैत अछि। जे 'व्यास' जीक कथाक स्वाद आ प्रभाव कैँ बासि-तेबासि होमए नहि दैत अछि। टटका बनल रहल सभदिन। जेना पात्रक निर्दुष्टता आ सच्चरित्रता 'व्यास'जीक कथाक वैशिष्ट्य थिकनि, ओहिना भाषाक शुद्धताक रक्षा करैत मनोरंजक शैली मे अपन बात कहि देब 'व्यास' जीक कथाक आकर्षण ओ विशेषता थिकनि।

संपादकीय सूचना-एहि सिरीजक पुरान क्रम एहि लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकैत छी-

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-1
मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-2
मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-3

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-4

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-5

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.प्रमोद झा 'गोकुल'-नागरिकता



प्रमोद झा 'गोकुल'

नागरिकता

आइ भोरे से दिनकर के मेघ झपने छैन ।झिहिर झिहिर हवा आ टिपिर टिपिर पानि ठण्ढ के और बढ़ा देने छै आ तै पर से विरोधी दलक आन्दोलन आर हरकम्प मचा देने छै ।केहनो हमय रहौ जाय ते पड़बे करतै, जखन गछने छियै तखन उपैये की!तै पर से ऐ बैसारी मे दू सय रुपैया आ नास्ता पानी सेहो देतै एहन खराब मौसम मे दरो देहारी कहाँ कतौ लगै छै?भेलै ते भैर दिनका बात ,साँझ पड़ैत घर ते चैलिये एबै! टेक्टरो जे घड़ी ने एलैये कलौवो बनिये गेल हेतै, खा पी के तैयार भ'जाइ छी ।कने आंगन जा के देखै छियै बनरझुल्ला बाली के खाना बनौलकै कि नै! घरबाली के मनुहार करैत बाजल ललन कामैत-

-खाना बैन गेलै बनरझुल्ला बाली ?

-एत्ते सबेर पेट मे खौंती किए फेकने छै आइ एकरा?

--हम लरम से कहै छियै आ ई बैंह गरम से बाजै छै! आइ जेबै धरना परदर्शन मे ,बैठल ठाँ कि अल्हुवा तौलबै? तैँ
जाइ छियै ओत्तै ।दौ झपसिन दू कौर सुअन,नै ते सतुवे गूर पर निमेरा कर' पड़तै ।
-हे लौ !थारी आगाँ मे रखैत बाजलि बनरझुल्ला बाली ,पुनः किछु सोचि- ऐ धरना परदर्शन से की हेतै?
-से की जान' गेलियै हम ? सुनै छियै मोदी सरकार कोनो कानून पास केलकैहे, तकरे विरोध मे ।
-मर ! मोदी सरकार ते बड निम्मन काम सब केलकैहे !आइ तक गरीबक सुरता एना भ'के कियो कहाँ लेने छलै! तखन विरोध कथी के? एगो बात बुझाबौ ते ई!
-कथी !
-ऐ कानून के नाम की छै?
-से हम की जान'गेलियै?
-तखन ई जाइ छै कथी ले ?
-दू सय रुपैया ले!
-तखन ई नै जाउ!
-से किए?
-जखन एकरा कुछो बुझले नै छै त'की कर' जेतै?
-पाइ ल' नेने छियै नेताजी से!
-भाँड़ मे जाउ पाइ आ नेताजी !कोनो नीके बात ले सरकार कानून बनौने हेतै ।हम पूछै छियै बौवा के, ओ ते पढ़ल लिखल छै !
-पुइछ लौ!
-बौवा रौ!
-हँ गै माय!
-कोन कानून पास केलकैहे मोदी सरकार!

-नागरिकता संशोधन कानून!

-ऐ से की हेतै?

-आन आन देश से लुटि पिट के जे हिन्दू सिख इसाइ आ पारसी भाइ बहीन एत' एलैहे ओकरा नागरिकता भेटतै ।अपने आरू जकाँ ओकरो सब के सुबिधा आ अधिकार भेटतै ,सएह!

-ऐ मे हर्जे की छै? ओ सब सबटा गमा के ऐ ठाँ एलैहे, अपने जैनके कि ने! तखन जँ ई कानून पास भेलैहे त' कोन अनर्थ भ' गेलै ? कान खोइल के सूनि लौ! जँ ई ऐ ठाँ से ससरलै ते कोनो करम बाँकी नै रखबै एकरा हम ।

-ठीक छै, जखन यैह मना करै छै ते नै जेबै! भारी मन से बाजल ललन ।

---''---''''---''----''''---'''------

--प्रमोद झा "गोकुल", दीप,मधुवनी (विहार), फोन+९८७१७७९८५१

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.३.परमानन्द लाल कर्ण-तीर्थक्षेत्रक माहात्म्य-४

परमानन्द लाल कण ि

तीथर्क्षत्रेक माहात्म्य-४



পাঠক সঁ আগ্রহ ......

তীর্থক্ষেত্রক মাহাত্ম্য

(পদ্ম পুরাণ সৃষ্টি খণ্ড)

তদন্তর গযা মে জা কে ব্রহ্মচর্যক পালন করৈত একাগ্রচিত্ত ভ' স্নান কর'ক চাহী । ভারত ! ওহি ঠাম গেলা সঁ মনুষ্য কে অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । ওহি ঠাম অক্ষয়বট নাম সঁ একটা গাছ অছি, জে তীনু লোক মে বিখ্যাত অছি । রাজন ! ওহি ঠাম পিতরক লেল জে পিণ্ডদান কএল জাযত অছি,ও অক্ষয় হোযত অছি । ওকর বাদ মহানদী মে স্নান কএ দেবতা আ পিতরক তর্পণ কর'ক চাহী । এহি সঁ মানুষ কেঁ অক্ষয় লোক মিলৈত অছি আ অপন কুলক উদ্ধার সেহো কএ লৈত অছি । তদুপরান্ত ব্রহ্মারণ্য মে স্থিত ব্রহ্মসরক যাত্রা কর'ক চাহী । ওহি ঠাম গেলা সঁ পুণ্ডরীক যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি ।

রাজেন্দ্র ! ওহি ঠাম সঁ বিশ্ববিখ্যাত ধেনুক তীর্থ দিশ প্রস্থান করী আ ওহি ঠাম এক রাতি রহি তিলকী ধেনুক দান করী । এনা করলা পর লোকনি সভ পাপ সঁ শুদ্ধ ভ' সোমলোক মে জাযত ছথি । ওহি ঠাম বাছা সহিত কপিলা গাযক পাওরক খুর'ক ছাপ দেখল জা সকৈত অছি । ওহি ছাপ মে সঁ পানি লএ কে আচমন করলা সঁ সভ পাপ নষ্ট ভ' জাযত অছি । ওহি ঠাম সঁ গৃধ্রবটক যাত্রা কর'ক চাহী । ও শূলধারী ভগবান শংকরক স্থান অছি । ওহি ঠাম শংকরজীক দর্শন কএ ভস্ম স্নান করী । এনা কএ ব্রাহ্মণ বারহ বর্ষক ধরি ব্রতক ফল

পারি নৈত ছৈথি আ দোসব ৱৰ্ণক মান্নষক সমস্ত পাপ কটি জাযত অছি, বাজেঁদ্র ! ওহি ঠাম সঁ ৱিশ্বৃৱিখ্যাত ধেন্নক তীর্থ দিশী প্রস্থান কবী আ ওহি ঠাম এক বাতি ককি তিনকী ধেন্নক দান কবী। তপ্শ্চাত্ উদয পর্বত পব জাযৱাক চাহী। ওহি ঠাম সাৱিত্রীক পাঐবক ছাপক দর্শন হোযত অছি। এহি তীর্থ স্থন পব সঁধ্যা উপাসনা কব'ক চাহী। এহি সঁ একহি সময মে ৱাঁবহ ৱঁবখক ধবি সঁধ্যা উপাসনাক ফন মিনৈত অছি। তপ্শ্চাত্ ওহি ঠাম সঁ যোনিদ্বাব নগ জাযৱাক চাহী। ঙা ৱিশ্বৃৱিখ্যাত স্থান অছি। বাজন্ ! জে কেও শ্বৃকু আ গ্রঞ্চ দ্বন্ন পঞ্চ মে গযা মে বহৈত ছথি , ও অপন ফনক সাত পীঠীক উদ্ধাব কহ দৈত অছি। এহি মে তনিক সঁদেহ নহি অছি।

বাজন্ ! তপ্শ্চাত্ তীর্থসেৱী নোকনি ফন্গু নদীক কছেব পব জায। ওহি ঠাম গেনা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত অছি আ পবম সিদ্ধি মিন জাযত অছি।তদন্তব একাগ্রচিত্ত ভহ ধর্মপৃষ্ঠক যাত্রা কব'ক চাহী। জাহি ঠাম ধর্ম নিহ নিরাস কবৈত অছি। ধর্মক ন'গ গেনা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত অছি। ওহি ঠাম সঁ ৱঁবহ্মাজীক উত্তম তীর্থ দিস প্রস্থান কবী আ ওহি ঠাম ব্রত'ক পানন কবৈত ৱঁবহ্মাজীক পূজা কবী।এহি সঁ বাজসূয আ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত অছি। একব ৱাঁদ মণিনাগ তীর্থক যাত্রা কবী জাহি ঠাম সহস্র গোদনক ফন মিনৈত অছি।এহি তীর্থ স্থন পব এক বাতি ৱকনা পব সর পাপ সঁ ছুটকাবা মিন জাযত অছি। একব ৱাদ ৱঁবহ্মর্ষি গৌতম ৱন মে জায। ওহি ঠাম অহিন্যাকুণ্ড মে স্নান কবনা সঁ পবম গতি মিনৈত অছি। ওকব ৱাঁদ বাজর্ষি জনকক কূপ অছি , জেকবা দেৱতা নোকনি সেহো পূজা কবৈত ছথিন। ওহি ঠাম স্নান কবনা সঁ মান্নষ ত্রিনোক পারি নৈত ছথি।ওহি ঠাম সঁ ৱিনাশন তীর্থ স্থন দিস গমন কৰু, জে সমস্ত পাপ সঁ মুক্ত কবহ ৱানা অছি। ওহি ঠামক যাত্রা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত অছি আ নোকনি সোমনোক জাযত ছথি। তপ্শ্চাত্ সব তীর্থক জন সঁ প্রকষ্ট ভেন গণ্ডকী নদীক যাত্রা কবী। ওহি ঠাম গেনা সঁ ৱাজপেয যজ্ঞক ফন

মিলৈত অছি আ লোকনি সূর্যলোক জাযত ছথি। ওহি ঠাম সঁ ধ্রুৱক তপোৱন মে জায কেব চাহী। ওহি ঠাম গেলা সঁ লোকনি যক্ষলোকক অনুভৱ কবৈত অছি। তদনুব সিদ্ধসেৱিত কর্মদা নদীক যাত্রা কবী। ওহি ঠাম গেলা সঁ প্ৱউবীক যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি আ লোকনি সোমলোক জাযত অছি।

তৈৎপশ্চাত্‌ মাহেশ্বৰী ধাবা ন'গ জায কেব চাহী। ওহি ঠাম গেলা সঁ যাত্রী কে অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি আ ও অপনে কুলক উদ্ধাব কৎ দৈত অছি। দেৱপুষ্কবিণী তীর্থ স্থল পব জা কে পৱিত্র ভেল লোকনি কে কখনহু দুষ্মতি নহি হোযত অছি আ রাজপেয যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি। একব রাঁদ ব্রঁবহ্মচর্যক পালন কবৈত একাগ্রচিত্ত ভৎ মাহেশ্বৰ পদক যাত্রা কবী। ওহি ঠাম স্নান কবলা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি। মাহেশ্বৰ পদ মে এক কোটি তীর্থ স্থনল গেল অছি। ওহি মে স্নান কবলা সঁ প্ৱউবীক যজ্ঞক মিলৈত অছি আ যাত্রী ৱিষ্ণুলোক জাযত ছথি। তদনুব ভগৱান নাবাযণক স্থান জায কেব চাহী, জাহি ঠাম সদিখন ভগৱান শ্রীহবি নিৱাস কবৈত ছথিন। ব্রঁবহ্মা আদি দেৱতা, তপোধন ঋষি,রাঁবহো আদিৎ,আঠ্‌ ৱসু আ গাবহো রুদ্র ওহি ঠাম উপস্থিত ভৎ ভগৱান জনার্দনক উপাসনা কবৈত ছথি। ওহি ঠাম অদ্ভুতকর্মা ভগৱান ৱিষ্ণুক ৱিগ্রহ শালগ্রামক নাম সঁ ৱিখ্যাত অছি। এহি তীর্থ স্থল মে অপন মহিমা সঁ অচ্যত আ ভক্ত লোকনিকক ৱব প্রদাতা ত্রিলোকপতি শ্রীৱিষ্ণুক দর্শন কেলা সঁ লোকনি ৱিষ্ণুলোক জাযত ছথি।ওহি ঠাম একটা কূপ অছি, জে সৱ পাপ হবি লৈত অছি। এহি মে চাব সাগবক জল মৌজুদ বহৈত অছি। এহি ঠাম স্নান কবলা সঁ লোকনি কেব কখনহু দুষ্মতি নহি হোযত ছৈন আ অৱিনাশী ৱ মহান দেৱতা ৱবদাযক ৱিষ্ণু ন'গ পহুঁচি তীন ঋণ সঁ মুক্ত ভৎ চান সন শোভাযমান হোযত ছথি। জাতিস্মব তীর্থ স্থল পব স্নান কৎ পৱিত্র আ শুদ্ধ চিত্ত ভেল মানুষ পূর্ৱজন্মক স্মবণ শক্তি পাবি লৈত অছি। ৱটেশ্বৰপুব মে জা কে উপৱাস কৎ ভগৱান কেশৱক পূজা কবলা সঁ লোকনি মনোৱাঁছিত লোক জাযত ছথি। তৎপশ্চাত্‌ সৱ

পাপ সঁ ছুটকাবা দিঅ রানা রামন তীর্থ মে জা কে ভগরান শ্রীহবিক প্রণাম কবনা সঁ লোকনি কে কখনহু মৃত্যু নহি হোযত ছৈন । ভবতক আশ্রম সেহো সর পাপ কেব নাশ কঽ দৈত অছি । ওহি ঠাম জা কে মহাপাতক নাশিনী কৌশিকী নদীক সেরন কব'ক চাহী , তাহি সঁ বাজসূয যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি ।

তদন্তব পবম উত্তম চম্পকাবণ্যাক যাত্রা কবী ।ওহি ঠাম এক বাতি উপরাস কবনা সঁ লোকনি সহস্র গোদানক ফল পারৈত অছি । তপেস্রাঞ কন্যাসংরেস্থ তীর্থ জা কে নিযম সঁ বহী আ নিযমানুকূল ভোজন কবী । এহি সঁ প্রজাপতি মনু লোকক প্রাপ্তি হোযত অছি । জে কন্যা তীর্থ মে থোড়রঞ্চ দান কবৈত অছি,ও দান অক্ষয ভঽ জাযত অছি । নিশ্রারান তীর্থ গেনা সঁ লোকনি অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পারৈত ছথি আ রিষ্ণুলোক জাযত ছথি । জে লোকনি নিশ্রাক সংগম মে দান কবৈত ছথি , ও বোগ শোক সঁ বহিত ব্রহ্মলোক জাযত ছথি । নিশ্রা সংগম পব মহর্ষি রসিষ্ঠক আশ্রম অছি । দেরকূট তীর্থক যাত্রা কবনা পব লোকনি অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পারৈত ছথি আ অপনা কুলক উদ্ধাব কঽ দৈত ছথি । ওহি ঠাম সঁ কৌশিক মুনিক কুণ্ড পব জায কেব চাহী , জাহি ঠাম কৌশিক গোত্র মে উৎপন্ন মহর্ষি রিশ্বামিত্র পবম সিদ্ধি পেনে ছলাহ । ওহি ঠাম ধীব লোকনি কে কৌশিকী নদীক তট পব এক মাস ধবি কক'ক চাহী । একহি মাস ওহি ঠাম ককনা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক পুণ্য মিলৈত অছি । কালিকা সংগম,কৌশিকী আ অরুণাক সংগম মে স্নান কঽ তীনবাতি উপরাস কবঽ রানা রিদ্বান লোকনি সর পাপ সঁ মুক্ত ভঽ জাযত ছথি । সপ্তন্দী তীর্থ স্থন পব গেনা সঁ দ্বিজ কৃতার্থ ভঽ জাযত ছথি আ সর পাপ সঁ শুদ্ধ ভঽ সূর্যলোক জাযত ছথি । মুনিলোকনিকক সেরিত ঔদ্যানক তীর্থ স্থল পব স্নান কবনা সঁ সর পাপ নষ্ট ভঽ জাযত অছি ।

তদন্তব চম্পাপুবী জা কে গংগাজীক তট পব তর্পণ কব'ক চাহী । ওহি ঠাম দণ্ডার্পণ মে জা কেব মানুষ সহস্র গোদানক ফল পারৈত ছথি । তদন্তব সন্ধ্যা মে

সদ্-রিদ্যা তীর্থ মে স্নান কবনা সঁ লোকনি রিদ্বান ভঽ জাযত ছথি । তকব রাঁদ গংগা সাগব সংগম মে স্নান কব'ক চাহী । এহি সঁ রিদ্বান লোকনি দস অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পাবৈত ছথি । তপেশ্বাঔ পাপ হাবিণী বৈতবণী নদী মে জা কে রিবজ তীর্থ মে স্নান কবী ; এহি সঁ লোকনি চান সন কান্তিমান ভঽ জাযত ছথি । প্রভার ক্ষেত্রক ভীতব কল নাম সঁ তীর্থ স্থল পব জা কে লোকনি সব পাপ সঁ ছুটকাবা পারি লৈত ছথি আ সহস্র গোদানক ফল পারি কুল কে সেহো উদ্ধাব কঽ দৈত অছি। সোন নদী আ জ্যোতিবথীক সংগম পব নিরাস কব'রানা লোকনি দেব আ পিতবক তর্পণ কঽ অগ্নিষ্টোম যজ্ঞক ফল পাবৈত অছি । সোন আ নর্মদাক উদ্‌গম স্থল পব বংশগুল্ম তীর্থ মে আচমন কবনা লোকনি অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পাবৈত ছথি । কোশলাক তট পব ঋষভ তীর্থ মে তীন বাতি উপরাস কবনা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি। কৌশলক কচ্ছেব মে কালতীর্থ মে স্নান কবনা সঁ গাবহ গোট রঁবদক দান কব'ক ফল মিলৈত অছি ।পুষ্পরতী মে স্নান কঽ তীন বাতি উপরাস কবনা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি আ লোকনি অপনা কুলক উদ্ধাব সেহো কঽ দৈত অছি । তদন্তব মহেন্দ্র পর্বত পব, জাহি ঠাম পবশুবাম জী নিরাস কবৈত ছলাহ ,ওহি ঠাম বামতীর্থ মে স্নান কবনা সঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি ।ও মতংগক মুনিক ক্ষেত্র অছি ,জাহি মে স্নান কবনা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি ।

তকব রাদ শ্রীপর্বত পব নদী মে স্নান কবী । ওহি ঠাম দেরহৃদ মে স্নান কবনা সঁ লোকনি পরিত্র আ শুদ্ধচিত্ত ভেনা পব অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পাবৈত ছথি আ পবম সিদ্ধি মিলৈত ছৈন । তদন্তব কারেবী নদীক যাত্রা কব'ক চাহী । ওহি ঠাম স্নান কবনা সঁ লোকনি সহস্র গোদানক ফল পাবৈত ছথি । ওহি ঠাম সঁ আগু সাগবক তট, জেকবা কন্যা তীর্থ কহল জাযত অছি , স্নান কব'ক চাহী । ওহি ঠাম স্নান কবনা সঁ লোকনি সব পাপ সঁ মুক্ত ভঽ জাযত অছি । তদন্তব সমুদ্র মধ্যবর্তী গোকর্ণতীর্থ মে জা কে ভগরান শংকবক পূজা কঽ তীন বাতি উপরাস কবনা সঁ

লোকনি দস অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পাবৈত অছি আ গণপতি পদ মিলৈত ছৈন। রাবণ বাতি ওহি ঠাম উপবাস কবলা সঁ মনুষ্য কৃতার্থ ভঽ জাযত অছি - হুনকা লেল কিছু শেষ নহি বহি জাযত ছৈন। এহি তীর্থ মে গাযত্রী দেবীক স্থান সেহো অছি, জাহি ঠাম তীন বাতি উপবাস কবলা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি। তদুপ্রান্ত সিদ্ধ লোকনি সঁ সেবিত গোদাবরীক যাত্রা কব'ক চাহী। তাহি সঁ গবামযি যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি আ লোকনি বাযুলোক জাযত ছথি। বেণাক সঁগম মে স্নান কবলা সঁ রাজপেয যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি আ ববদা সঁগম মে স্নান কবলা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি।

ব্রহ্মস্থূণা তীর্থ মে তীন বাতি উপবাস কবলা পব লোকনি সহস্র গোদানক ফল পাবৈত ছথি আ ও সূর্যলোক জাযত ছথি। কুঁজা বন মে ব্রহ্মচর্যক পালন কবৈত একাগ্রচিত্ত ভঽ স্নান কঽ তীন বাতি উপবাস কবলা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি।একব বাদ দেবহ্রদ মে, জাহি ঠাম সঁ কৃষ্ণবেণা নদী নিকলৈত অছি, স্নান কবী। ফেবি জ্যোতির্মাত্র হ্রদ মে আ কন্যাশ্রম মে স্নান কবী। কন্যাশ্রম মে গেলা সঁ সঔ অগ্নিষ্টোম যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি।সর্বদেবহ্রদ মে স্নান কবলা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি আ জ্যোতির্মাত্র মে স্নান কবলা সঁ লোকনি কেব পূর্বজন্মক স্মবণ ভঽ জাযত অছি। তকব বাদ পবম পুণ্যমযী বাণী আ নদী মে শ্রেষ্ঠ পযোষ্ণী নদী মে জায বালা আ পিতবক পূজন কবঽ বালা লোকনি কেব সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি।

নাবদ জী যুধিষ্ঠিব সঁ কহৈত ছথিন - মহাবাজ! তদনন্তব দণ্ডকাবণ্য মে জা কে গোদাবরী মে স্নান কব'ক চাহী। ওহি ঠাম শবভঙ্গ মুনি আ মহাত্মা শুকক আশ্রমক যাত্রা কবলা সঁ লোকনি কখনহু দুর্গতি মে নহি জাযত ছথি আ অপনা কুল কে পবিত্র কঽ দৈত ছথি। তদুপ্রান্ত সপ্ত গোদাবরী মে স্নান কঽ নিযমক পালন কবৈত নেম নিষ্ঠা সঁ ভোজন কবঽবালা লোকনি মহান পুণ্যক ভাগীদাব

হোযত ছথি আ দেৱলোক জাযত ছথি ।ওহি ঠাম সঁ দেৱপথক যাত্রা কবী । এহি সঁ লোকনি দেৱসত্রক পুণ্য পাবি লৈত ছথি । তখিকাবণা মে ব্রঁবহ্মচর্যক পালন কবৈত জিতেঁদ্রিয ভাব সঁ বহী । তখিকাবণা মে গেলা সঁ লোকনি কে সব পাপ নষ্ট ভহ জাযত অছি । ধীব লোকনিকক লেল উঁচিত অছি জে নিযমক পালন কবৈত আ নিযমানুকূল ভোজন কবৈত এক মাস ধবি কক'ক চাহী । এহি সঁ ও ব্রঁবহ্মলোক জাযত ছথি আ অপনা কুলক উদ্ধাব কহ দৈত অছি । তকব বাঁদ মেঘা বন মে জা কে দেৱতা আ পিতবক তর্পণ কব'ক চাহী । এহি সঁ অগ্নিষ্টোম যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি সঁগহি সঁগ সুমবণশক্তি আ মেধাক প্রাপ্তি হোযত অছি । ওহি ঠাম সঁ কালঞ্জব তীর্থ স্থল পব গেলা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি ।

তদুপ্রান্ত পর্বত শ্রেষ্ঠ চিত্রকূট প মন্দাকিনী নদীক যাত্রা কব'ক চাহী । ও সব পাপক নাশিনী অছি । ওহি মে স্নান কবলা সঁ দেৱতা আ পিতবক পূজন মে তৎপব বহহ বালা লোকনি অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল পাবৈত ছথি । ওহি ঠাম সঁ ভর্তৃস্থান পব গমন কব'ক চাহী । ওহি ঠাম গেলা পব লোকনি সিদ্ধি পাবি লৈত ছথি । এহি তীর্থক প্রদক্ষিণা কহ শিবস্থানক যাত্রা কব'ক চাহী । ওহি ঠাম একটা বিখ্যাত জনাব অছি , জেকবা চাব সাগবক নিবাস স্থল কহল গেল অছি । এহি ঠাম স্নান কহ জনাবক প্রদক্ষিণা কবী, এহি সঁ পবিত্র ভেল জিতাত্মা লোকনি পবম গতি পাবৈত ছথি । তদন্তব , শৃঙ্গবেবপুবক যাত্রা কবী । ওহি ঠাম গঁগা মে স্নান কহ ব্রঁবহ্মচর্যক পালন কবৈত ইঁন্দ্রীক সঁযম মে বখলা পব লোকনিকক সব পাপ নষ্ট ভহ জাযত অছি আ ও বাজপেয যজ্ঞক ফল পাবৈত ছথি । ওহি ঠাম সঁ ভগৱান শঁকবক মুঞ্জবটক যাত্রা কবী । ওহি ঠাম মহাদেৱক পূজা আ প্রদক্ষিণা কবলা সঁ গণপতি পদ মিলৈত অছি ।

...............শেষ আগিলা অঁক মে

२.४.मुन्ना जी- पोथी परिचय- तोहर कतेक रंग



मन्नुा जी
पोथी परिचय- तोहर कतके रगं

निहुरब,आओर निहुरि जएब मुदा नेहोरा,किन्नहुं नै करब।इतर विधाक सम हएब हम सब।ताहि लेल बेरएल/ कतिएल,बेकछएल बीहनिक एक एक ग'बकें जतन सं रोपैत डोभैत झमटगर करबाक जुगत में जुमल बीहनि कथाकार में सं चिन्हार भेल रचनाकार छथि श्री जगदानन्द झा ' मनु'। किछु उठल्लू रचनाकारक ऐ विधाक प्रति कएल खिधांस ऐ विधा/ लेखनीकें अड़ाचने रहल।आ हम सब नहुंए नहुंए परती परल मैथिली कथा साहित्यक खेतकें हरियर कचोर करैत डेगा डेगी मोकाम दिस ससरल नहि दौगल जा रहलौं।आब अहां सबहक अदखोइ बदखोइ आ अवडेरवाक प्रयास कहां सबकें कतिया रकबा में सक्षम भेल।आ हीनता सं बहरा ऐ विधाकें पालि पोषि झमटगर/ संपूर्ण गाछ बनेबा मे हमर सबहक सक्षमता कें अकानू।

लेखक द्वारा दू आखर शीर्षक सँ देल लेखकीय विचार मे वर्णित -" तोहर (नारीक) कतेक रंग पर आधारित कहै छथि।मुदा नै,किन्नहु नै।हम एकरा आओर आगू ल' जा देखै छी कि ओ इ बिकछेबाक प्रयास कएलनि ऐछ जे

पुरुषकें पुरूषाह बनेबा आ रखबा में स्त्रीक विभिन्न रूप/ संबंध मात्र ठाढ़ भ' इजोत देखबैए।आ पुरूष तखनहि अपन अस्तित्व पेबा/ बचेवा मे सक्षम भ' पबैए।

मानव जीवनक प्रत्येक रंगकें उभारि चित्रित करबा में जाहि कुशलता(फरीछ आ तीक्ष्ण दृष्टि)क खगता चाही तकर निवहता में लेखक सए प्रतिशत सफल भेलाह ऐछ।

एकर भूमिका मे ऐ विधा के फरिछबैत लेखक स्वयं लिखै छथि-" जेना कहियो क्रिकेट मे पा््ंच दिवसीय मैचक प्रचलन छल।पछाति एकदिवसीय आ आब खगतावश ट्वेंटी ट्वेंटी लोकप्रिय भ' चलनि मे ऐछ।तहिना मैथिली कथा विधा विकासक क्रमे उपन्यास सँ चलि दीर्घकथा, लघुकथा होइत बीहनि कथा पर आबि टिकल।आ समकालीन कथा विधाक सिरमौर भ' चलनि मे बसि रहल।

105कथाकें एक सूत्र मे बन्हनाइ संभव आ उचितो नै।से एक दशक सँ बेसी सँ बीहनि कथा मे रमल रहबाक कारणे एक दिस निश्शन,निछरल दृष्टि फरीछ रचना देब' मे सफल भेलाह। मुदा दोसर दिस ऐ विधाक वैधानिक परिधि सँ बहरएल कथाक समिलात,संयोजन मे चुक सेहो भेलनि।ओना त' माय-बापक लेल सब संतान प्रिय होइछ।मुदा फा््ंटक बेर मिझर क' राखब कतेक उचित ?बेटीकें कान्या वा बालक बालिका सह शिक्षा विद्यालय मे नामांकन करा सकै छी। मुदा बेटाक कान्या पाठशाला मे नामांकनक प्रयास करबै?रचनाक अहां लग अभाव नै,जँ अभावो त' कथा संख्या-9,10,12,13,18,20,21.......आदि कथाकें बागि संख्यात्मक रूपें कमी क' गुणात्मक निश्शनता सोझां अबैत। एखन खोंचाह सन!

दियादी डाहकें सोझां रखैत- कक्का माय बड़जोर दुखित ऐछ,अहां दस

हजारक इंतजाम क' दैतौं।
हौ ,तोरा सँ हमर हालति की नीक ऐछ।तों अपन जामुनक गाछ बेचि लएह दस हजार आबि जेतह।
मुदा कक्का,ओ त' 25-30 हजारक ऐछ।
हौ,खगल मे जे आबि जेत' से उपकार!
आइ माए भर्ती भेलखिन, कक्का अपन खाता मे पन्द्रह हजार जमा क' एलाह।"--- बेगरता

निकम्मा पुतक चिन्ता मे डूमल पिता अपन पौत्र सँ- " बौआ,ललन कत' गेलाह ?
पौत्र- बाबा,बाबूजी पूजा क' रहलाह।
आंइ,खेत पर नै गेलाह ?

नै,त'
हौ,कहिहौन जे - घर मे अन्न- धन भरल रहै छै तखने पूजोक पटि होई छै।----अन्न धन।

प्रत्येक कथा मनुष्यक संवेदना हीनता पर अंगुली उठबैत, संकेत करैत जीवनक पुष्टि करैछ।जेना बस मे भरल लोकक बीच दु गोटे कें मारि मुर्दा क' देलक आ 60-65लोक तमशबीन बनल बुझ्रू।
70म कथा में वर्णित ' प्रेम ' ओकर मोनकें 30बरख पाछां ल' गेल।नवीं में संग पढ़ै बाली आइयो मानस पटल पर सटएल सन।इएह छै असल प्रेम।वासना मे बहकव,प्रेम नै थिक।

अंध विश्वास में फांसल लोककें उत्कृष्ट लेखकीय दृष्टि सं फरीछ करैत लिखै छथि-

' मइयां , भगवान कत' रहै छथि ?

सबठाम हौ।

तहन अहां नित दिन मन्दिर किए जाइ छी ?"

एहि संग्रहक एक एक कथा पढ़ैत काल अपन जीवनक घटना परिलक्षित होइत जएत।आ रसे रसे पढ़बाक उत्सुकता से दुन्ना, तिगुना बढ़ैत पुरे स़ग्रहकें पढ़ा देबाक लेल पूर्ण सक्षम ऐछ।

पोथी-" तोहर कतेक रंग "

विधा- " बीहनि कथा"

लेखक - जगदानन्द झा "मनु"

प्रकाशक-पल्लवी प्रकाशन,निर्मली,सुपौल(बिहार)

पृष्ठ-102, दाम- 200 भा.रू.

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

पद्य

३.१.प्रमोद झा 'गोकुल'-कोइली

३.१.प्रमोद झा 'गोकुल'-कोइली



प्रमोद झा 'गोकुल'

कोइली

गा गा गै कोइली !विरह गीत तों
उड़ि बैस वाँसक घन झोंझ मे ।
कतेक पीड़ भरने छैं तों भीतर
जे रुदन भरल छौ मिठ बोल मे ।।
चल हमरो सङ कएले करियाही
अपन फराके दुखियाक टोल मे ।
तों गबिहैं गै ! हम कानब सङ मे
नित दिन नीरव वनक सङोर मे ।।
दुखक तप्त अनलमे स्याह भेल तों
रचै छें अनुरागक सुमधुर परिभाषा ।
अन्तर्वेदन रुदन सदन भए हमरो

पथ हेरय पुनि मिलनक प्रत्याशा ।।
एकसुराह बनि वसन्तमे गै !तोहूंँ
अपने धुन मस्तीमे छैँ लागल ।
घोघ उघारिके फूलक मधुकर
भए रहल अछि केहन पागल ।।
तैँ सुन बात हमर गै करियाही !
जो जगा आ तों हमर बियाही ।
खग जानय खग केर भाषा
दुखी हम तोँ सहज दुखियाही ।।

- प्रमोद झा 'गोकुल', दीप, मधुवनी (विहार) फोन-9871779851

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

